श्री रवीन्द्र शर्मा (गुरूजी)

5 सितम्बर, 1952 को अदिलाबाद में जन्मे श्री रवीन्द्र शर्मा (गुरूजी) मूलतः एक पंजाबी परिवार से हैं, जो अपनी पिछली एक पीढ़ी से महाराष्ट्र की सीमा से लगे पश्चिमोत्तर आंध्रप्रदेश के अदिलाबाद शहर में आकर बस गया है। विभिन्न लोग उन्हें विभिन्न रूप – **कलाकार, कारीगर, कथाकार, इतिहासविद, शिक्षाविद, समाज शास्त्री, निपट भारतीयता के पैरोकार, अर्थ शास्त्री, दार्शनिक और न जाने कितने रूपों में जानते हैं।** दसवीं तक अदिलाबाद में पढ़ाई करने के बाद, हैदराबाद के कालेज और फिर बड़ौदा के विश्वविद्यालय से कला में स्नातक और स्नातकोत्तर की डिग्री वगैरह लेने के बाद, पिछले लगभग 25–30 वर्षों से वापस अपने क्षेत्र अदिलाबाद में ही जाकर बस गए हैं। वहां की 20 कि.मी. की परिधि में जो दुनिया उन्होंने अपनी दृष्टि से देखी, और जिसका प्रतिरूप संपूर्ण भारत वर्ष में स्पष्ट दिखाई देता है, उसी को हम सब को बताते हैं। उनकी दृष्टि का पैनापन और विविधता ही उन्हें विभिन्न विशेषणों से विभूषित कर जाता है। **समाज में लोगों की जीवन शैली, अर्थ व्यवस्था, जातिगत मान्यताऐं और व्यवहार, अन्य जातियों से अंतर–संबंध, भारतीय परंपराऐं, सभ्यता, संस्कृति, सौंदर्य दृष्टि, संस्कार और अन्य ढेर सारी सामाजिक व्यवस्थाऐं उनका अध्ययन विषय रहा है।**

उनके कार्य की गुरूता को देखते हुए, उन्हें कई संस्थाओं के अलावा आंध्रप्रदेश सरकार के **कला रत्न सम्मान** और प्रतिष्ठित **हंस सम्मान** से भी सम्मानित किया जा चुका है। वे वर्तमान में **आई. आई. टी. (दिल्ली, मुंबई, आदि), निफ्ट, एन. आई. डी. और आई. आई. आई. टी., हैदराबाद** जैसे देश के कई प्रतिष्ठित संस्थानों में अतिथि व्याख्याता के रूप में आमंत्रित किये जाते हैं। वे राष्ट्रीय कारीगर पंचायत के संस्थापक सदस्यों में से एक एवं वर्तमान में उसके मुखिया भी हैं। उनकी बातों को आकाशवाणी द्वारा साप्ताहिक प्रसारण के माध्यम से, **'शिलान्तरंगालू'** कार्यक्रम के नाम से कई सालों तक लगातार प्रसारित किया गया है। इसके अलावा दूरदर्शन के कई कार्यक्रमों एवं देश की कई पत्र पत्रिकाओं में उनके कार्यों को प्रमुखता से प्रसारित किया गया है। उनके कृतित्व के ऊपर एक विस्तृत लेख तो पेंग्विन पब्लिकेशन द्वारा सुश्री रजनी बक्शी लिखित एक पुस्तक **'बापु कुटी – *Journeys in rediscovery of Gandhi'*** में काफी पहले ही प्रकाशित किया जा चुका है। अभी कुछ समय पहले उनके संदेशों, वक्तव्यों की ऑडियो सीडी **'भारत – गुरूजी की दृष्टि से'** दो भागों में प्रकाशित हो चुकी है। इसके अलावा, उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक पुस्तक **'स्मृति जागरण के हरकारे – *श्री रवीन्द्र शर्मा (गुरूजी)*'** भी प्रकाशित हो चुकी है। वे स्वयं कई कलाओं और सभी 18 कारीगरी विद्याओं में पारंगत हैं। अदिलाबाद में उनका कला आश्रम है।

कला आश्रम; अदिलाबाद (आ.प्र.)